**Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,**
*Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com*
*PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JULY-AUG, 2019, VOL- 7/52*

# महात्मा ज्योतिरावफुले: शैक्षणिक दृष्टिकोण की सामाजिक भूमिका

# A Critical Analysis of the Social Role of Mahatma JyotibaPhule's Educational Perspective

**कविता ना. खोब्रागडे**

*शोध छात्रा (पीएच.डी. शिक्षा शास्त्र ), शिक्षा विभाग , महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र. ई.मेल : kavitakhobragade18@gmail.com*

**Abstract**

*इस शोध पत्र में महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षणिक दृष्टिकोण की सामाजिक भूमिका का अध्ययन किया गया है।भारत में वर्षों से चलतीआई वर्णव्यवस्थाने निचली जाति और नारी शिक्षा की उपेक्षा की थी ।महात्मा फुले के काल में जातियता और वर्णव्यवस्था परम शिखर पर थी। निचली जाति और नारी जाति के शिक्षा की उस समय की स्थिति अत्यंत गंभीर थी । महात्मा फुले तत्कालिन स्थिति का अध्ययन कर चुके थे और वेंशिक्षा को मानवी विकास का एकमात्र साधनमानते हैं।शिक्षा अपने अस्तिव के होने का एहसास दिलाती हैयह उनका मानना था ।उन्होनें निचली जाति और नारी शिक्षा के विकास को लेकर हंटर आयोग में तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था को चुनौती देनेवाले विचार रखे तथा तत्कालीन वंचित,पीड़ित,दलित और नारी आदि को मानो शिक्षा का एक विकल्प प्रतिमान दिया।फुले द्वारा दिया गया शिक्षा का विकल्प प्रतिमानआज भी प्रासंगिक है।यह विकल्प प्रतिमान सामाजिक शिक्षा का एक अच्छा उदाहरण है।प्रस्तुत शोध द्वारा शोधकर्ती ने महात्मा ज्योतिराव फुले के शैक्षिक दृष्टिकोण की सामाजिक भूमिका का अध्ययन किया हैं । प्रस्तुत शोध गुणात्मक शोध विधि के आधार पर ऐतिहासिक शोध विधाद्वारा पूर्ण किया गया है।प्रदत्त संकलन हेतु प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोत के आधारपर प्रदत्तों को संकलित किया गया हैं।ज्योतिराव फुले समाज परिवर्तन के अग्रदूतरहे हैं।आज वंचित, पीड़ित और दलित समाज की शैक्षिक प्रगति सोचनीय है।इस पिछड़े समाज के विकास का मुद्दा हरदम विवादित रहा है पर आज तक समाधान कारक चर्चा सामने नहीं आयी है।सही मायने में पिछड़े समाज का सर्वांगीण विकास शिक्षा व्यवस्था की बड़ी चुनौती रही है।शैक्षिक विकास हेतु महात्मा फुले ने तत्कालीन स्थिति में पिछड़े समाज के विकास हेतु क्या प्रयास और सुझाव दिए हैं और उनके शैक्षिक दृष्टिकोण की सामाजिक भूमिका क्या रही आदि का अध्ययन प्रस्तुत शोध व्दारा किया गया हैं ।इस शोध द्वारा महात्मा फुले की सामाजिक शिक्षा और वंचित, पीड़ित तथा दलित समाज पर रहे प्रभाव को भी देखा गया हैं।*

*मुख्य बिंदु : महात्मा ज्योतिराव फुले, सामाजिक शिक्षा, समाज परिवर्तन, निचली जाति, वर्णव्यवस्था.*

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

**प्रस्तावना :**

" दबे-कुचले वर्गों में बुद्धिमत्ता,नैतिकता,प्रगति एवं समृद्धि
का विकास करने हेतु शिक्षा की आवश्यकता सर्वाधिक है।"

--- महात्मा फुले

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

महात्मा ज्योतिराव फुलेएक समता मूलक और न्याय पर आधारित समाज रचना की बात करते रहे। उन्होंने अपनी रचनाओं में किसानों और खेतिहर मजदूरों केलिए विस्तृत योजना का उल्लेख किया है। पशुपालन, खेती, सिंचाई व्यवस्था के बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा है तथा गरीबों के बच्चों की शिक्षा पर उन्होंने बहुत ध्यान दिया।उन्होंने आज से 150 वर्ष पहले कृषि शिक्षा के लिए कृषिविद्यालय खोलने की बात की।1875 में पुणे और अहमदनगर जिले में किसानों का प्रथम आंदोलन महात्मा फुलेकी प्रेरणा से हुआ था। इस समय समाज के अन्य सुधारकों में किसानों के बारे में विस्तार से सोच-विचार करने का रिवाज़ नहीं था लेकिन महात्मा फुले ने इसे अपने आंदोलन का हिस्सा बनाया। स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित महात्मा फुलेके विचार क्रांतिकारी रहे। मनु की व्यवस्था में सभी वर्णों की स्त्री को शूद्र के श्रेणी में गिनाजाता था।महात्मा फुलेने प्रचलित विवाह पद्धति में बड़े सुधार के साथ नई विवाह विधि का निर्माण अपने सत्यधर्म नामक सगंठन के जरिए किया। प्रचलित विवाह प्रथा के कर्मकांड में स्त्री को पुरुष के अधीन माना जाता था लेकिन महात्मा फुलेका दर्शन हर स्तर पर गैर-बराबरी का विरोध करता था।महात्मा ज्योतिराव फुले महानविचारक, समाज सेवी तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। महात्मा फुले ने महिलाओं, दलितों एवं शूद्रो कीशिक्षा के विकास हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया।महात्मा फुले भारतीय समाज के सभी वर्गों को समान शिक्षा प्रदान करने के प्रबल समर्थकरहे ।

डॉ. अम्बेडकर महात्मा फुलेके व्यक्तित्व-कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित रहे हैं ।महात्मा फुलेसन् 19वीं शताब्दी के सामाजिक परिवर्तन के महानायक रहे । उन्होनें सामाजिक न्याय और शिक्षा के विशिष्ट ध्येय के लिए अपना जीवन समर्पित किया। कार्य और विचार से ओतप्रेत महात्मा ज्योतिरावफुले चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी और महान व्यक्ति रहे। महात्मा फुलेने स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, जाति निर्मूलन, किसान और कामगारों के जीवन में मूलभूत परिवर्तन लाए।सामाजिक समता, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक न्याय, और शोषण मुक्ति के लिए ज्योतिराव ने जीवन के अन्तिम क्षण तक संघर्ष किया। आधुनिक महाराष्ट्र के एक महान समाज-चिंतकज्योतिराव फुले मानवतावादी विचारों से प्रेरित थे।

शिक्षा हर दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति के सुधार का माध्यम हैं यह उनकी धारणा थी।महात्मा फुले ने इसी द्वार को शूद्रों-अतिशूद्रों तथा महिलाओं के लिए खोलकर नवभारत की नींव रखी। दलित और शोषित वर्ग को उनके मानवीय हक दिलाने के लिए उन्होनें जीवन भर संघर्ष किया। ज्योतिराव और उनकी पत्नी सावित्रीबाई दोनों का जीवन हर भारतीय के लिए गौरवपूर्ण और गर्व करने वाला है। आधुनिक महाराष्ट्र की रचना में फुलेदंपत्ति ने महत्वपूर्ण

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

योगदान दिया।सामाजिक क्रांति के संगठन रूप में महाराष्ट्र और भारत के इतिहास में महात्मा फुलेका स्थान अलौकिक है। अपने जीवन मे उन्होनें विचार और कर्म को अधिक महत्व दिया। बचपन से सामाजिक, धार्मिक, और आर्थिक भेदभाव को तथा जातीयता के कारण उस समय के उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के साथ शोषित बर्ताव के ज्योतिराव गवाह रहे। इसलिए सामाजिक क्रांति की मशाल अपनी २५ वर्ष की आयु में लेकर जीवन के अन्त तक समाज परिवर्तन के लिए जूझते रहे तथा आधुनिक भारतीय समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे ।तत्कालीन सामाजिक नवजागरण का प्रभाव और क्रांति ने उन्हें समाज परिवर्तन की प्रेरणा दी थी। तत्कालीन ईसाई मिशनरी का मानवतावाद, थॉमस पेन का मानव अधिकार, धाई माँ सगुणाबाई के मानव धर्म के संस्कार और ईसाई पादरियों के व्यक्तित्त्व और कार्य प्रणाली का प्रत्यक्ष प्रभाव आदि सभी प्रभाव उनके जीवन में सामाजिक कार्य कीनींव रही। मित्रों के साथ बचपन में खेल-कूदकी उम्र में उन्होंने विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया।उन्होंने भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजकीय पृष्ठभूमि का अध्ययन किया। भारतीय समाज में प्रचलित प्रथा, परम्परा, रीति-रिवाजजो इस समाज के विकास की मुख्यधारा को रोक लगाई बैठी थी इसका विरोध कर सामाजिक परिवर्तन की मशाल जलाई।जिसके कारण निचली जाति और स्त्री समाज अपने मानव होने के अधिकार से वंचित हैं इस सामाजिक विडम्बना को फुले महोदय जानते थे ।इस विडम्बना का विरोध कर समाज में नवपरिवर्तन का ध्वज लहराया। ज्योतिराव ने शराब बंदी के लिए आंदोलन कर शहर में शराब बंद कराई।शूद्रों के लिए अपने घर में पानी पीने का तालाब खुदवाए। जैसी कथनी वैसी करनी के चरित्रार्थ नायक महात्मा ज्योतिराव फुले ने 28 नवम्बर 1890 में संसार से विदाली।सम्पूर्ण मानव जाति को मानव होने के भाव से परिचित कराने वाले ज्योतिराव सच में महान क्रांतिकारी थे।महात्मा फुले ने कोटिपीड़ित, वंचित, अस्पृश्य, दलित समाज के लोगों का अपनी आत्म उन्नति और विकास का मार्ग (दिशा) दिखाया ।

**शोध प्रश्न :**

- ☐ महात्मा फुले के समय की सामाजिक कैसी थी ?
- ☐ महात्मा फुले के समय की राजकीय स्थिति कैसी थी ?
- ☐ महात्मा फुले के समय की आर्थिक कैसी थी ?
- ☐ महात्मा फुले के सामाजिक क्रांति में सामाजिक शिक्षाका विकल्प प्रतिमान क्या था ?
- ☐ महात्मा फुले की सामाजिक शिक्षा क्या थी ?

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

- महात्मा फुले के सामाजिक क्रांति मे सामाजिक शिक्षा का कार्य क्या था ?

**शोध के उदेश्य :**

महात्मा फुले के काल की सामाजिक,आर्थिक, राजकीय स्थिति का अध्ययन करना।

महात्मा फुले के सामाजिक शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।

वंचित, पिडित, पिछडे और स्त्री समाज के शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन हेतु महात्मा फुले के विकल्प प्रतिमान का अध्ययन करना।

**महात्मा फुले कालीन (तत्कालिन) सामाजिक स्थिति :**

"भारत में राष्ट्रीयता की भावना का विकास तब तक नही होंगा ,जब तक खान-पान एवं वैवाहिक संबधो पर जातिय बंधन बने रहेंगे।" -

महात्मा फुले

**प्रस्तावना :**

१९वी शताब्दी के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध्द में भारतीय राजनौतिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि सभी क्षेत्र मे बडे उथल-पुथल के साक्षी रहे हैं। १९ वी शताब्दी में भारत में युगान्तरकारी परिवर्तनों का सूत्रपात हो गया था। १६ वी शताब्दी मे आये अग्रेंजो नें अब तक पंजाब को छोडा तो सम्पूर्ण भारत मे अपना वर्चस्व बना लिया था। भारत मे आझादी के आंदोलन शुरू हो चुके थे। फ्रान्स की राज्यक्रांति के कारण युरोप में एक नई विचारधारा का प्रारम्भ हो चुका था। इंग्लन्ड की औद्योगिक क्रांति के कारण भारत मे माशिनों का उपयोग बढा था, यातायात के साधनों में वृद्धि हुई थी। दूरसंचार, रेल, बैंक, आदि सुविधा से परस्पर संपर्क और व्यवहार बढे, विचारों के आदान-प्रदान को गति मिली। भारतीय लोग पढने लगे थे। अर्थात भारतीयों के विचारों में दासता के विरुद्ध संघर्ष की आग निर्माण हो चुकी थी। ब्रिटिश शासन के आगमन तक भारतीय समाज को विभिन्न कुरीतिओं ने जखड् रखा था। सतीप्रथा, कन्यावध जैसी भीषण एवं बाल विवाह जैसी घातक और अस्पृश्यता तथा जातिभेद जैसी हानिकारक कुरीतियों ने देश को पतन के गर्त में धकेल रखा था। युरोप की नई विचारधारा एवं शिक्षा के कारण भारत के सामाजिक जिवन में क्रांतिकारी परिवर्तन होने शुरू हो गये थे।

भारतीय बुद्धीजीवियों में महात्मा फुले नई विचारधारा से प्रेरित होकर महाराष्ट्र की एक अव्दितीय विभूतिके रूप मे महाराष्ट्र के सामाजिक बदला व हेतू मानोवें महानक्रांतिकारी के लिए उभार आये थे। (कुमार

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.२०-२१,चंचरीक, कन्हेयालाल ," महात्मा ज्योतिराव फुले", पृ.स.११ )

तत्कालिन भारत की सामाजिक स्थिति :

भारतमें अंग्रेजोंसे पहले ग्रामसंस्था, जातीसंस्था, और परिवार का प्रचलन यही गावके जीवन की आधारशीला थी। लेकीन अंग्रेजों के शासन का परिणाम इन तीनों पर हुआ और कूछ ही समय बाद ये संस्था लुप्त हो गई। धर्म संस्था के शक्तिशाली समर्थन से चातुवर्ण्य प्रणाली पर आधारित जाति व्यवस्था अधिक सख्ती से जीवित रहने लगी थी। सामाजिक जीवन का केंद्रबिंदू अब व्यक्ति न रहा था। व्यक्ति ग्रामसंस्था से केवल वर्ण और परिवार की संस्थाओं के माध्यम से ही संपर्क बनाए रखते थे। राजसंस्था से ग्रामसंस्थाओं के मार्फत ही व्यक्ति का जीवन परंपराओं, अंधाविश्वासों से जकडा हुआ था। मोक्ष की कल्पना व्यक्तिगत स्वरूप की थी। ब्राह्मणों का कर्म था पुरोहिती। उनके पास जमीन बहुत कम थी। गाव की खेती योग्य जमीन के मलिक अधिकतर मराठे थे। दलित जातियों के पास जमीन होती भी थी पर बहुत थोडी। गाव का पाटील मराठा जाति का जिन्हे वंशानुक्रम से पाटील बनने का अधिकार प्राप्त होता था। पाटील का प्रमुख कार्य ग्रामसंस्था और राजसंस्था के बीच संबंध बनाये रखना। यह गाँव से लगान इकठा करता था और उसे समय समय पर सरकार के दरबार में जमा करता था। उसकी यह जिम्मेदारी प्रथम थी। इस कार्य में उसे कुलकर्णी की साहायता मिलती थी। कुलकर्णी के पद भी वंशानुक्रम से प्राप्त होते थे। चौकीदारी का काम उन महार, मांग, दलितों को सौंपा जाता था जिनके पूर्वजों ने भी यह कार्य किया था।(कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.१९ ,चंचरीक, कन्हेयालाल ," महात्मा ज्योतिराव फुले", पृ.स.१६ )

महात्माफुलेकालीनमहाराष्ट्रसामाजिकस्थिति :वास्तवमेंइतिहास का पुनेर्लेखन इतिहास का अविभाज्य अंग होता है। अतीत के तथ्थों की तलाश उनकी प्रामाणिकता-प्रासंगिकता की पृष्टि करना, विश्लेषण करना और व्याख्या करना।१९ वी शताब्दी के मध्य तक भारतीयों में राजनैतिक एकता के विचार का उदय नही हुआ था। प्राचीन काल से उच्च वर्गों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण एक जैसा था। ब्रिटिश शासकों की एक नीति थी कि, भारत मे विभिन्न जाति, पंथ, धर्म, के लोग थे जिनकी भाषा, संस्कृति अलग-अलग थी। इसलिए विभिन्न सामुदायिक चेतनाओं को प्रोत्साहन देने की नीति का अनुसरण ब्रिटिश कर रहे थे। भारतीय जनता मे एकता का प्रभुत्व ब्रिटिशों के लिए भयावह था इसलिए ब्राहमण-अब्राहमण तथा उच्चवर्ग और दलित वर्ग के भेदों का दुरुपयोग

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

किया गया था ।(सूचना ,ताराचंद."भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास " खंड -४ मंत्र्यालय भारत सरकार पृ.स.xvii)सदियोंतकगाँवोकीसामाजिक और बौद्धिक स्थिति अंधाविश्सास पूर्ण , संकुचित और रूढीवादी बनी रही । गाँव आर्थिक प्रवाह हीनता ,सामाजिक प्रतिक्रियावाद और सांस्कृतिक अन्धेपण के अलग-अलग केन्द्र बने थे ।शिवाजी ने स्थापित मराठा राज्य और बाद पेशवाई शासन के समाप्त होते-होते सामाजिक स्थिति में भी बहुत बडा परिवर्तन आया । व्दितीय बाजीराव के शासनकाल में अनैतिकता, जातिवाद खुलकर सामने आने लगा था । मात्र ब्राह्मण अपने स्वार्थ की सिध्दी के लिए बाजीराव को कृष्ण, शिव का अवतार मानकर उसकी पूजा, अर्चना करने लगे थे । उसके शासनकाल में जातीयता चरम सीमा पर पहुच गई थी ।(कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स. २२ चंचरीक, कन्हेयालाल ," महात्मा ज्योतिराव फुले", पृ.स.१६ )

तत्कालिन हिंन्दू स्त्री की सामाजिक स्थिति : हिंदू शास्त्रों के अनुसारस्त्री को अविश्वासी, दृष्ट, चंचल, अविचारी और स्त्रेण माना जाता था । स्त्री का पती के साथ बैठकर भोजन करना अपमान माना जाता था । उसका विवाह बाल्यावस्था कर दिया जाता था । पती के साथ न रहना और ससुर के लोगों की सेवा करने के लिए उसे रखा जाता था । लोभी पुरुष अधिक सुख प्राप्त करने और अपनी आकांक्षाओं की पुर्ती हेतू दो या तीन विवाह करते थे और अपनी पत्नी को एक घर में रखते थे ।(कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स. ,चंचरीक, कन्हेयालाल ," महात्मा ज्योतिराव फुले", पृ.स.१६ ,)

पेशवाशासनमेब्राह्मण का समाज मे स्थान :ब्राह्मणअपनेस्वार्थकीसिध्दिकेलिएबाजीरावकोकृष्ण, शिव का अवतार मानकर उसकी पूजा, अर्चना करके और उसकी झुठी तारीफ व प्रशंसा करने के कारण बाजीराव खुश होकार उन्हे भूमि देना, लगान मे छुट देना, राजकीय करों में भी उन्हे अब भारी छुट मिलने से ब्राह्मण वर्ग आर्थिक संप्पन्न होने लगे थे । पुना के आस-पास बार बार अकाल की स्थिति निर्माण होती थी इस परिस्थिती मे किसान मजदूर भूख से बेहाल रहते थे, पर पेशवा संपन्न पण्डित, वेद्पाठीयों और ब्राह्मणों को भरपेट भोजन, पर्याप्त मात्र में अनाज का वितरण करता था । (मेश्राम ,एल. जी." महात्मा फुले रचनावली " पृ .स. १४५-१४६ ,शहा. मु,बा. " भारतीय समाज क्रांति के जनक ",पृ.स. १५ ,कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान",पृ.स.२९ )

पेशवा शासनमे किसान कामगारों की सामाजिक स्थिति :

गरीब जनता का शोषण पेशवाई काल में सबसे ज्यादा हुआ। कारण पेशवा बाजीराव निरन्तर अपने षड्यंतत्रों के तहत होने वाले युध्दों और विलासितापूर्ण जीवन मे व्यस्त रहता था । उसके लिए पेशवा की बार-बार

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

धन की माँग बनी ही रहती थी। इस धनपुर्ति के लिए पेशवा के कर्मचारी किसानों की फसलें जबरन लुट लिया करते थे। किसानों के पशुओं को भी बेच देते थे। पेशवा का इतना आतंक था की, कोई भी किसान राज्य-कर्मचारी या उनके नीति के खिलाफ आवाज तक नही उठा सकता था। किसानों से चौथ और सरदेशमुखी या जबरन धनवसुली एक आम बात हो गई थी। महात्मा फुले ने अपने किसान कोंडा नामक पुस्तक मे किसान के हाल का विस्तार से लेखन कर किसानों की समस्या को उजागार किया है। (शहा. मु,बा. " भारतीय समाज क्रांति के जनक" ,पृ.स. १५ )

किसानतीनभागोंमेबटाहुआहै। शुद्र समाज के किसान कुणबी, माली और धनगर नाम से जाने जाते हैं जो शुद्र केवल खेती कर अपना पेट पालते थे वे 'कुलवाडी' या कुणबी कहलाते थे। जो खेतिहार अपनी खेती संभालकर बागवानी करने लगे थे उन्हे 'माली' कहा गया। जो यह दोनों काम करते हुए भेड-बकरी चराने और उनके समूह पालने लगे वे गडरिए कहलाते थे। लेकीन इन तीनों समुदायों में रोटी-बेटी व्यवहार नही होता था पर मेलजोल बना रहता हैं। इससे यह लगता हैं की ये जाति एक ही शुद्र जाति से उपजी होंगी। अधिकांश लोग अनपढ और ईश्वरभक्ती में विश्वास करनेवाले और भूखे-कंगाल, जिसके पास आजीविका का कोई साधन नही था। ज्योतिराव इस ग्रंथ मे महाराष्ट्र के गरीब किसान के तंगहाल और दयनीय जीवन का चित्रण करते हुए कहते है की, ब्राह्मण पुरोहित शुद्रों को जन्म से लेकर स्मशान तक और गर्भधारणा से लेकर तीर्थयात्रा तक विभिन्न अवसरों पर धर्म के नाम पर लुटते थे।( फुले लिखित किसान कोंडा ग्रन्थ की प्रस्तावना से ,फुले, ज्योतीराव. "गुलामगिरी " पृ.स.२३ मेश्राम ,एल. जी." महात्मा फुले रचनावली " कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.२८ )

पेशवा शासन मे दलित शुद्र की सामाजिक स्थिति : सामाजिक स्थिति के विषय में फुलेने अपने ग्रंथ गुलामगिरी में लिखा है कि, "आजतक जितनी भी धिंगामस्ती हुई है उसमे भी तरसे कहो या बाहर से, ब्राह्मण पण्डित पुरोहित वर्ग के लोग अगुवाई नही कर रहे थे, ऐसा हो ही नही सकता। इस द्रोह का पुरा नेतृत्व वे लोग ही कर रहे थे। उमाजी नाईक रामोशी महाराष्ट्र का एक शुद्र जाति में पैदा हुआ व्यक्ति था, जो लडाकू था, अंग्रेजों से मुकाबला कर शहीद हो गया लेकीन ब्राह्मण शहीदों को याद किया जाता शुद्र को नही।"( फुले, ज्योतीराव. "गुलामगिरी " पृ.स.२९ )

दलित का जीवन गुलामों से भी बदतर हो गया था। वे अपनी मुलभूत जरुरतों को पेशवाई स्वरक्षण प्राप्त ब्राह्मणो, साहुकारो से कर्ज लेकर पुरा करते थे और सूद से मुक्त नही हो पाते थे। भ्रष्टाचार समाज में पुरी तरह व्याप्त हो चुका

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

था। सन १८१८ में जब मराठा राज्य का पूर्ण रूप से पतन हो गया तो आम जनता में ख़ुशी की लहर व्याप्त हुई, दलित और शुद्र वर्ग ने तो बहुत ही राहत महसूस की । (कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.२६ ,मेश्राम ,एल. जी." महात्मा फुले रचनावली " पृ .स. १९८-१९९)

महाराष्ट्र के ग्रामों की सामाजिक स्थिति :महाराष्ट्रके ग्रामों मे ब्राह्मण ,मराठा,माली, सुतार,लुहार तेली जैसी जाति आधारित समाज रचना और जाति आधारित व्यवसाय थे । ब्राह्मणणों का कर्म पुरोहिती था । खेती योग्य जमीन के मलिक अधिकतर मराठे थे । ग्राम संस्था, जातीसंस्था और संयुक्त परिवार का प्रचलन था । व्यक्ति इस परंपरागत सामाजिक जीवन का केंद्रबिंदू न था । सामंतवादी व्यवस्था में राजा सर्वोच्च होता था, लेकीन ग्रामीण भूमि पर उसका कोई अधिकार नही होता था । ग्रामीण भूमि तो ग्राम समाज और ग्रामीण लोगों के अधीन रहती थी । कुल पैदावार का एक निश्चित भाग राजा को लगान के रूप में जरूर दिया जाता था । राजा को कर के रूप में दिये गये भाग के अतिरिक्त शेष पैदावर गाँव के ही उपयोग के लिए होती थी । गाँव मे बढई, लुहार, कुम्हार, मोची, धोबी, तेली, आदि जैसे वंशनुक्रम से प्राप्त व्यवसाय किये जाते थे, यह गाँव की जरुरतों को पुरा करते थे । गाँव मे हलखोर का काम करने वाले वर्ग को अछुत समझा जाता था । लोगों के व्यवसाय उनकी जाति के आधार पर निश्चित थे । लोग अपनी जरुरतों को पुरा करने के लिए अन्य समुदायों से नाममात्र का लेन-देन या विनिमय करते थे । यातयात के साधन सीमित थे । (मेश्राम ,एल. जी." महात्मा फुले रचनावली " पृ .स. २१०,शहा. मु,बा. " भारतीय समाज क्रांति के जनक ",पृ.स. १२ ,कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.२३,)

महाराष्ट्र की तत्कालिन राजकीय स्थिति

महाराष्ट्र मे मराठा शासन की शक्ति और विनाश :-

मराठाशक्तिकेप्रतिकशिवाजी ने अपनी बाल्याकाल मे पुना की जागीर प्राप्त की थी । यह जागीर उन्हे विरासत से अपनी पिता से मिली थी । तत्कालिन महाराष्ट्र के सामाजिक पृष्ठभूमी को समझने के लिए इस देश की मराठा शक्ति को जानना जरुरी है । मराठा शक्ति के प्रतिक शिवाजी को जागीर अपने पिता शहाजी से मिली । शहाजी बिजापूर रियासत के प्रमुख सामन्त थे और उनकी सेना में अधिकांश निम्न जाति वर्ग के पराक्रमी, वीर योध्दा, किसान थे । जागीर मिलने के बाद शिवाजी ने सबसे पहले विकेंद्रित मराठा शक्ति को एकीकृत किया ।महाराष्ट्रकेशक्तिसंपन्नमराठासरदारमहात्ववांक्षा के शिकार होकार आपसी संघर्ष में उलझ गये। शाहूजी की शक्ति क्षीण होने लगी, तब राजकाज में चतुर नीति-निपुण चितपावन ब्राहमन परिवार के लोगों को आगे आने का अवसर

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

मिला । वे शाहुजी के नए पेशवा के रूप में सामने आये और मराठा सरदार सबसे अधिक संपन्न हो गये । बाद मे इन पेशवाओं ने चातुर्य से शिवाजी के वंशजों को नाममात्र का शासक बना दिया और सम्पूर्ण शासन को की बागडोर अपने हाथों में ले ली । इस प्रकार पुना दरबार में पेशवाओं का प्रभाव स्थापित हो गया ।पेशवा बालाजी विश्वनाथ (१७१३-१७२०), बाजीराव (१७२०-१७४०), बालाजी बाजीराव व्दितीय (१७४०- १७६१), । १७६० में जब पानिपत की तीसरी लडाई हूई तो मराठे अहमदशाह अब्दाली से हार गए और अब मराठों की शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होते गयी । बाद में पेशवा माधवराव (१७६१-१७७२) और पेशवा नारायणराव (१७७२-१७७३ ) ने पुना रियासत में शक्ति संन्तुलन बनाए रखने का बहुत प्रयास किया गया लेकीन इस्ट ईंडिया कम्पनी की साम्रज्य विस्तार की नीति का निरन्तर दबाव बढता गया । मराठा राज्य के शासक वर्ग के लोग आम जनता के हितों को दरकिनार कर अपने हितों और महत्वकांक्षाओं की पुर्ती में लग गए , जिस से आम जनता खासकर मराठा जातियों, कामगारों, किसानों, तथा निम्न वर्ग के लोगों में उनके प्रति असंतोष उत्पन हो गया ।ब्राह्मण वर्ग के लोग उस समय शासकीय पदों पर थे, वे हर तरह से अपने तथा अपनी जाति के लोगों के हितों प्रति संलन्ग थे । उसके कारण जातिवाद बहुत ही घिनौने रूप में सम्पूर्ण महाराष्ट्र में फैलने लगा था । (चंचरीक, कन्हेयालाल."महात्मा ज्योतिराव फुले",पृ.स.१३ ,मेश्राम ,एल. जी." महात्मा फुले रचनावली " पृ .स. १९५ ,शहा. मु,बा. " भारतीय समाज क्रांति के जनक ",पृ.स. १२ ,कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.१६ )

**मराठा संघर्ष और ब्रिटिश का आगमन :**

पेशवा माधवराव की उनके चाचा रघुनाथ रावने शासन के लालच में हत्या करदी, जिससे मराठा सरदार रघुनाथ के खिलाफ होग येथे। अपनों के खिलाफ के कारण उसे अंग्रेजो की मदद लेनी पडी । परिणाम स्वरूप सन १७७५ में प्रथम अंग्रेज मराठा युध्द हुआ । यही से मराठों का पतन होने लगा ।१मार्च१७७६ को अंग्रेजों और पुनादरबार के बीच पुरांदर की सन्धि हुई। बम्बई सरकार द्वारा पुना दरबार से एक और सन्धि की गई, जो बडगाँव मे हुई थी । इस सन्धि का कारण था अंग्रेजों का मराठे से हारना १७ मई १७८२ को सालबाई में पुना दरबार और अंग्रेजो के मध्य एक सन्धि हुई । सन १८०० में नाना फडणवीस की मुत्यु के पेशवा और सिंधिया के बीच सन्धि हुई लेकीन दोनों एक-दुसरे को शंका की दृष्टी से देखते थे ।देखते-देखते पुना के दरबार से ब्राह्मण जाति के पेशवाकी गद्दी हाथसे आपसी उलझन के कारण निकाल गई । पेशवाओं के इस कृतित्व से पुना और दक्षिण के लोगो का मनोबल टूट चुका था । पेशवा ने आखिर ३१ दिसंबर १८०२ को लॉर्ड वैलेजली से सन्धि से मराठो से २६ लाख रुपये वार्षिक

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

आय की भूमि भी पेशवाओं द्वारा हथिया ली। पेशवा ब्राह्मण का जप-तप, पूजा-पाठ, सब कूछ धरा का धरा रह गया।२० फरवरी १८१८ को अंग्रेजो के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। पेशवाई का अन्त हो गया। इस प्रकार पुना में पुरी तरह अंग्रेजी राज्य कायम हो गया। इस प्रकार शिवाजी द्वारा बडे यत्न और परिश्रमपूर्वक स्थापित स्वत्रत मराठा राज्य को इन पेशवाओंने अपनी महत्वाकांक्षा और स्वार्थपरता, जातिवाद, छुंआछुंत, ऊचनीच, पारस्पारिक वैमनस्य, केंद्रिय सत्ता का अभाव और ब्राह्मण धर्म में पाखण्ड के वर्चस्व के कारण हमेशा-हमेशा के लिए खो दिया और अंग्रेजी शासन का गुलाम बना दिया। (कुमार ,प्रभात. " समाज सुधार मे फुले का योगदान" ,पृ.स.१८ )

भारत की राजव्यवस्था : भारत में अंग्रेजों से पहले ग्रामसंस्था, जातीसंस्था, और परिवार का प्रचलन यही गावके जीवन की आधारशीला थी। लेकीन अंग्रेजों के शासन का परिणाम इन तीनों पर हुआ और कूछ ही समय बाद ये संस्था लुप्त हो गई। धर्म संस्था के शक्तिशाली समर्थन से चातुवर्ण्य प्रणाली पर आधारित जाति व्यवस्था अधिक सख्ती से जीवित रहने लगी थी। सामाजिक जीवन का केंद्रबिंदू अब व्यक्ति न रहा था। व्यक्ति ग्रामसंस्था से केवल वर्ण और परिवार की संस्थाओं के माध्यम से ही संपर्क बनाए रखते थे। राजसंस्था से ग्रामसंस्थाओं के मार्फत ही व्यक्ति का जीवन परंपराओं, अंधाविश्वासों से जकडा हुआ था। मोक्ष की कल्पना व्यक्तिगत स्वरूप की थी। ब्राह्मणों का कर्म था पुरोहिती। उनके पास जमीन बहुत कम थी। गाँव की खेती योग्य जमीन के मलिक अधिकतर मराठे थे। दलित जातियों के पास जमीन होती भी थी पर बहुत थोडी। गाँव का पाटील मराठा जाति का जिन्हे वंशानुक्रम से पाटील बनने का अधिकार प्राप्त होता था। पाटील का प्रमुख कार्य ग्रामसंस्था और राजसंस्था के बीच संबंध बनाये रखना। यह गाँव से लगान इकठा करता था और उसे समय समय पर सरकार के दरबार में जमा करता था। उसकी यह जिम्मेदारी प्रथम थी। इस कार्य में उसे कुलकर्णी की साहायता मिलती थी। कुलकर्णी के पद भी वंशानुक्रम से प्राप्त होते थे। चौकीदारी का काम उन महार, मांग, दलितों को सौंपा जाता था जिनके पूर्वजों ने भी यह कार्य किया था।

**महात्मा फुले कालीन भारत की आर्थिक स्थिति :**

भारतपरअधिकारकरनेमेंअग्रेंजोकोसौसालभीकमसमयलगा। १७५७ से १८५७ के बीच कम्पनी की नीति में अनेंको बार परिवर्तन हुए थे। किन्तु इस दरम्यान कम्पनी ने अपने मुख्य उद्देश्यों कों कभी भी अपने आखों से ओझल नही किया। वे उद्देश्य थे-कम्पनी के मुनाफे में वृध्दि करना, भारत से होने वाले ब्रिटेन के लाभों में वृध्दि करना, तथा भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व को बनाए रखना। भारत में अंग्रेजों के हितों को ध्यान में रखकर और उन्हे बढावा देने के

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

लिए कम्पनी तथा ब्रिटेन की सरकार ने नई आर्थिक नितियों का प्रतिपादन किया और समयानुकुल उन्हे लागू किया । अग्रोजों ने जिन आर्थिक नितियों को अपनाया उनके कारण भू-राजस्व प्रणाली, कृषी, व्यापार, और उद्योग के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का भारतीय जन-जीवन पर बडा प्रभाव पडा। उसमे कूछ अच्छे भी थे, किन्तु स्वार्थ से प्रेरित होने कारण भारतीयों के लिए ये ज्यादातर अहितकारक साबित हुए । (फुले, ज्योतीराव,गुलामगिरी पृ.स ४३ .मेश्राम .एल. जी- महात्मा फुले रचनावली- पृ .स. २०२,३०९ ,३१३ )

**ग्रामीण अर्थव्यवस्था :** अंग्रेंजों के आगमन के पहले तक भारत मे सभी गांव लगभग आत्मनिर्भर थे। किसान खेती करते थे और अपनी उपज का एक भाग राजस्व के रूप में शासक को देते थे। शासक ग्राम प्रधान के माध्यम से वसुली करते थे। अंग्रेजों ने अपने शासन मे अपने अधिकारीयों और भारतीयों एजेंन्टों के नियंत्रण में पुरानी व्यवस्था को जारी रखा। परन्तु यह भारतीय एजेंट उच्च वर्ग के थे। यह किसानों को कष्ट देने लगे। राजस्व निश्चित राशी के रूप में वसूल किया जाने लगा, फिर उपन्न चाहे जो भी हो। राजस्व की वसुली मुद्रा के रूप में होने लगी इसलिए किसान ऐसी फसलें उगाने के लिए मजबूर हुए जिन्हे बाजार में बेचा जा सके। माशिनों द्वारा बनाये कपडे और अन्य उत्पादित वस्तूओं के कारण स्थानीय दस्तकारों के धन्दे भी चौपट होने लगेथे । अब गावों की आत्मनिर्भरता समाप्त होने लगी थी। (मेश्राम .एल. जी."महात्मा फुले रचनावली". पृ .स. ६८ ,कीर,ध . "महात्मा ज्योतीराव फुले "पृ.सं.१८२-१८४ )

**भारत की लुट** :लगान के नाम पर किसानों का खून चुसा जा रहा था। उनकी तबाही और बरबादी का अन्दाजा प्रतिवर्ष बढने वाली मालगुजारी की रकम के आकडे १७७५-७६ तक यह रकम २८ लाख, १८ हजार पौन्ड थी। अनेक भागों से भारत का सोना इंग्लंड जाने लगा था। (शहा. मु,बा. "भारतीय समाज क्रांति के जनक",पृ.स.४ )

**औद्योगिक पुंजीवाद का युग :**भारतकेआर्थिकशोषण के इतिहास में १८१३ ई. वर्ष महत्वपूर्ण माना जाता है। अब कम्पनी के एकाधिकार का अन्त हो गया था और औद्योगिक पुंजीवाद द्वारा भारत के शोषण का नया अध्याय शुरू हुआ था। इंग्लंड में औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप बडे-बडे कारखाने खुल चुके थे इन कारखानों में कम खर्च पर अधिक कापडों का उत्पादन होने लगा था। अब हाथ से बने भारतीय कापडों से सस्ते अंग्रेजी कपडे मिलने कारण भारतीय वस्त्र उद्योग खत्म होने लगा था। इससे देश का आर्थिक ऱ्हास बडी तीव्रता से होने लगा था। भारत का कच्चा माल सस्ते दाम में खरीद कर कारखानों में बना पक्का माल भारत के बाजार में बेचा जाने लगा। औद्योगिक पुंजीवाद के कारण बेकारों की संख्या मे वृध्दि होने लगी और लाखों भारतीय आजीविका के अभाव

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

में अकाल के मुह में समा गये। १९ वी सदी के पुर्वार्ध्द में सात बार अकाल पडा जिसमें अनेक व्यक्ति भूख से तडप-तडपकर मर गये। १८३३ के बाद औद्योगिक पुंजीवाद ने औपनिवेशिक शोषण का एक और क्षेत्र निकाला की, भारत में जमीन खरीद कर बागानों के मालिकों कें रूप में वहा बस जाने की इजाजत दी जाने लगी। भारत में बागानों की प्रथा थी। (शहा. मु,बा. "भारतीय समाज क्रांति के जनक",पृ.स. १)

महाराष्ट्र की तत्कालिन आर्थिक स्थिति :

महाराष्ट्र के ग्रामोंका आर्थिक शोषण : सामंतवादी व्यवस्थामें राजा सर्वोच्च होता था, लेकीन ग्रामीण भूमिपर उसका कोई अधिकार नही होता था। ग्रामीण भूमि तो ग्राम समाज और ग्रामीण लोगों के अधीन रहती थी। कुल पैदावार का एक निश्चित भाग राजा को लगान के रूप में जरूर दिया जाता था। राजा को कर के रूप में दिये गये भाग के अतिरिक्त शेष पैदावर गाव के ही उपयोग के लिए होती थी। गाँव मे बढई, लुहार, कुम्हार, मोची, धोबी, तेली, आदि जैसे वंशनुक्रम से प्राप्त व्यवसाय किये जाते थे, यह गाँव की जरुरतों को पुरा करते थे। गाँव मे हलखोर का काम करने वाले वर्ग को अछुत समझा जाता था। लोगों के व्यवसाय उनकी जाति के आधार पर निश्चित थे। लोग अपनी जरुरतों को पुरा करने के लिए अन्य समुदायों से नाममात्र का लेन-देन या विनिमय करते थे। यातयात के साधन सीमित थे। दलित शुद्र वर्ग के लोग खेती-मजदुरी करके, दस्तकारी करके भी अपने परिवार को भरपेट भोजन, तन ढकने को सही ढग के कपडे तथा रहने को दो हाथ जगह व छत भी नही जूटा पाते थे। उनका जीवन गुलामों से भी बदतर हो गया था। वे अपनी मुलभूत जरुरतों को पेशवाई स्वरक्षण प्राप्त ब्राह्मणो, साहुकारो से कर्ज लेकर पुरा करते थे और सूद से मुक्त नही हो पाते थे। भ्रष्टाचार समाज में पुरी तरह व्याप्त हो चुका था। (कुमार ,प्रभात." समाज सुधार मे फुले का योगदान" पृ.स.२२ २१, चंचरीक, कन्हेयालाल."महात्मा ज्योतिराव फुले",पृ.स.१२,)

**महात्मा फुले की सामाजिक शिक्षा**

**सामाजिक शिक्षा** :सामाजिक शिक्षा का तात्पर्य प्रौढ शिक्षा के समान साक्षरता प्रदान करने मात्र से नही है। साक्षरता तो एकमात्र आगामी शिक्षा को प्राप्त करने का साधन जिसे उपलब्ध कराकर शिक्षित किया जा सकता है। हस्ताक्षर करना शिक्षा नही है। देश में विभिन्न सामाजिक रूढी, परम्परा, बुराईयाँ, पिछडापण, अंधविश्वास, संकीर्णता, अवैज्ञानिकता, निर्धनता आदि को समूल नष्ट कर सामाजिक पुनरुत्थान कर आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास, वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति आदि विकास सामाजिक शिक्षा के अंग है।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

महात्मा फुले की सामाजिक शिक्षा और सामाजिक क्रांति मे योगदान

**प्रस्तावना :**

ज्योतिबा फुले ने दलित आंदोलन का एक सुन्दर बीज बोया था। तत्कालिन समाज व्यवस्था ब्राह्मण व्यवस्था के विरुद्ध जोतीबा फुले ने क्रांति की घोषणा की। जोतीबा फुले ने समाज से छुंआ-छुंत मिटाने का पिडा उठाया। तत्कालिन समाज ने क्रांति ज्योति के साथ जो व्यवहार किया, वह उनके साले अपनी बहन सावित्री को लिखे एक पत्र से स्पष्ट होता है वे लिखते है, "बहन तुम और जिजाजी बहिष्कृत हो गए हो। महार मांग दलित के लिए तुम जो काम करते हो, वह कुल भ्रष्ट करने वाला है। इसलिए कहता हुं कि जाति रूढी के अनुसार ब्राह्मण जो कहे, उसी प्रकार आचरण करना चहिए। "सावित्रीबाई अपने भाई को उत्तर देते हुए पत्र लिखती है और उससे उनका सामाजिक कार्य का दृढ निश्चय स्पष्ट होता है," भाई तुम्हारी बुद्धि कम है और ब्राह्मण भट्ट लोगों की शिक्षा से वह दुर्बल बनी हुई है। तुम तो गाय बकरी के पास जाकर उन्हे सहला सकते हो। नाग पंचमी के अवसर पर विषेले नागों को दुध पिला सकते हो, लेकीन महार, मांगों को जो तुम जैसे ही है, उन्हे अछुंत मानते हो। भट्ट लोग तुम्हे भी कलुषित मानते है और महार मांगों जैसा ही समझते है। महार मांग पढ लिखकर इन्सान बनकर जीए। इसके लिए कोशिश करने वाले ज्योतिबा महार-मांगों को पढाते है और मै दावे के साथ कहती हुं कि वे यह अच्छां कार्य कर रहे हैं। मैं उनकी मदद करती हुं। यह इतना आनन्दायक है कि इससे परमानन्द मिलता है उसके अतिरिक्त मनुष्यत्व की सीमा भी दृष्टीगोचार होती हैं। " उपरोक्त विवरण से तत्कालिन समाज ने फुले के साथ जो व्यवहार किया वह स्पष्ट होता है अर्थात इसका मतलब बचपन से निचले जाति मे जन्म में ज्योती को हर समय उच्च वर्ण के व्यवहार से परेशानी हुई। उनके सामाजिक क्रांति की प्रेरणा अब उन्हे बैचेन कर रही थी। (कीर धनंजय, "महात्मा जोतिराव फुले " पृ.स.११७ ,जगताप ,मु. " युगपुरुष महात्मा फुले " पृ,स,७७ ,नरके ,एच." महात्मा फुले साहित्य और विचार" पृ.सं.१९ )

ज्योतीराव का प्रथम बालिका स्कूल :

१८४४ में ज्योतिबा ने खोली प्रथम स्कूल मे प्रारम्भ में ६ बालिकाएं थी, जिसमे ४ ब्राह्मण , १ मराठा, १ धनगर। उनके नाम इस प्रकार –

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

| नाम | आयु |
|---|---|
| १ . अन्न पूर्णा जोशी | ५ |
| २ . सुमती मोकाशी | ४ |
| ३. दुर्गा देशमुख | ६ |
| ४ . माधवी धत्ते | ६ |
| ५ . सोनू पवार | ४ |
| ६ . जनी करडिले | ५ |

उपरोक्त सारणी से पता चलता हैं की ज्योतिराव द्वारा खोला गया प्रथम विद्यालय जिसमे सभी जाति की नारी का प्रवेश हैं। अर्थात उस समय सभी जाति के नारी की शिक्षा के लिए महात्मा फुले कार्य कर रहे थे।

**प्रथम बालिका स्कूल :**

(विद्रोही एम.आर." दलित दस्तावेज "पृ.स. ९९)

**नारी शिक्षा के लिए योगदान :**

हमारे देश का दुर्भाग्य ही है की जिस देश मे आदिशक्ती के रूप में नारी की कल्पना की गई हो और जहा "यंत्र नायर्स्तु पूज्यते तत्र देवता" उक्ति प्रचलित हो उसी देश में नारी की स्थिति एक पशुसमान हो गई थी। धर्म के ठेकेदारों ने शास्त्रों को तोड-मोडकर कर कुछ ऐसा रच दिया कि नारी केवल भोग्या ही बन गयी थी। वास्तव में जो समाज की निर्मात्री थी उसकी यह दशा देखकर ज्योतीराव बहुत द्रावित हुए हुए। दुसरी ओर हमारे देश के पतन के गर्त में पहुची नारी अशिक्षा और अज्ञानवश पुरूषों के अत्याचार सहते हुए गुलामी के बन्धन में जकडी हुई थी। नारी शिक्षा के कार्य में ज्योतीराव को बडी मुश्किलों का सामना करना पडा। उन पर अत्याचार किये गये। हिंदू

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

लडकियों के लिए अमेरिकन मिशन द्वारा सन १८१९ में १९ वी सदी की की प्रथम पाठशाला खोली गई थी। सन १८४० में कूछ अन्य विद्यालय पुणे के आस-पास भी खोली गई थी। स्काटीश मिशन के द्वारा पुणे मे एक विद्यालय खोला गया था, उसमें १० बालिका यें पढती थी।

सन १८४८ उनके ब्राह्मण मित्र गोवंडे इनाम कमिशन में काम करते थे, उनका स्थानांतरण अहमदनगर के जज कार्यालय मे हुआ था। यह जगह मिशनरी विद्यालय के लिए बहुत प्रसिद्ध थी। ज्योतीराव अपने मित्र से मिला और वहा के कुमारी फर्रर की अमेरिकन मिशन द्वारा संचालित स्त्री स्कूल को देखने गये। भारत के स्त्री शिक्षा को लेकर फर्रार इतनी चिंतित देख ज्योतिराव व गोवंडे प्रभावित हुए। उन्होनें निर्णय लिया की पुना जाकर वह दलित स्त्री के लिए पाठशाला खोलकर इसका संदेश पुरे महाराष्ट्र जाए। ज्योतिराव पुना लौटते ही सन १९४८ के अगस्त माह में बुधवार पेठ मुहल्ले में भिडे के मकान में निम्न जाति के लडकीयों के प्रथम स्कूल खोली गई। स्कूल की प्रथम महिला शिक्षिका के रूप में अपनी पत्नी सावित्री की नियुक्ति की। अब समाज में हलचल मच गई। इससे धर्म भ्रष्ट होगा। धर्म ग्रंथ के अनुसार शुद्र पढ नही सकते, यह ईश्वर, धर्म, और समाज की इच्छा और मर्यादा के विपरीत हैं। विद्या शुद्र के घर निवास नही कर सकती आदि जैसी चर्चा और आलोचना होने लगी। सावित्री पर तो पाखंडीयों ने पत्थर गोबर, लकडी, फेकी पर सावित्री अपने कार्य से जरा भी नही हटी। इतना दृढ संकल्प था। बेटा ज्योती अब नही सून रहा तो पिता गोविदराव को समझाया गया की इस धर्म भ्रष्ट कृत्य को बंद करे। पिता ने ज्योति को शिक्षा प्रसार और सुधार कार्य को बंद करने को कहा नही तो घर से निकल जाने को कहा। ज्योतीराव और सावित्री ने घर छोड दिया। अब उनका आर्थिक बल ओर कमजोर हो गया पर वे अपने दृढ संकल्प पर स्थिर थे। ज्योतीराव का यह कार्य अब काफी प्रगति पर था। अपनी इस संस्था की बदौलत उन्होने सन १८५१ की १७ सितम्बर को रास्ता पेठ नामक मुहल्ले में एक अन्य कन्या विद्यालय की स्थापना की। इस विदयालय का निरीक्षण करने के बाद दादोबा पांडुरंग तर्खडकर ने यह मत व्यक्त करते हुए कहा था की, "इतने काम समय में विद्यालय की प्रगति का श्रेय उसके संचालकों को ही जाता है। शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष जॉन वार्डन और न्यायाधीश ब्राऊन ने विद्यालय के कार्य को देखकर काफी सन्तोष व्यक्त किया था। नारी शिक्षा और निम्न जाति के शिक्षा की हिमायत करने वाले के रूप में ज्योतीराव का नाम सम्पूर्ण महाराष्ट्र मे गुजने लगा था। अथक परिश्रम और त्याग अब चारों तरफ एक ऐसी ज्योति के रूप में प्रकाश जिससे सम्पूर्ण पददलित समाज प्रकाशित होने लगा था। पुना आब्ज्वर्र नामक पत्र ने उनके १२ जून १८५२ के अंक में लिखा था की, अपने देश्वासियों के उद्धार के

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

लिए ज्योतीराव द्वारा जो प्रयास किये जा रहे हैं और नारी शिक्षा के क्षेत्र में उन्होने जो प्रशंसनीय कार्य किया है इसके लिए सरकार से उन्हे २०० रुपये का सम्मान-वस्त्र इनाम दिया था। (कीर धनंजय, "महात्मा जोतिराव फुले " पृ.स.४७ ,जगताप ,मु. " युगपुरुष महात्मा फुले " पृ,स,१४४,मेश्राम ,एल.जी." महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली ".पृ.सं.,नरके ,एच." महात्मा फुले साहित्य और विचार" पृ.सं२५.२७ )

**ज्योतिबा द्वारा अपने जीवन काल में खोले गए विद्यालय की सूची :**

| **अ.क्र** | **विद्यालय का नाम** | **स्थापना तिथि** |
|---|---|---|
| १ | भिडेवाडा जिला पुना | १-१-१८४८ |
| २ | हरिजन , जिला पूना | १५-५-१८४९ |
| ३ | हडपसर जिला पुना | १-८-१८४८ |
| ४ | ओतूर,जिला पुना | १५-१२-१८४८ |
| ५ | सवड,जिला पुना | २०-१२-१८४९ |
| ६ | आलहाट का घर जि .पुना | १-७ -१८४९ |
| ७ | नाय गाव ता.खंडाला जि ,सातारा | १५-७-१८४९ |
| ८ | शिरवल,तालुका खंडाला.जि सातारा | १८-७-१८४९ |
| ९ | तले गाव , ढमढेले ,जि .पुना | १-८-१८४९ |
| १० | शिरवर,जिला पुना | ८-८-१८४९ |
| ११ | आजीरवादी ,माजगाव | ३-३-१८५० |
| १२ | कारंजे ,जि सातारा | ६-३-१८५० |
| १३ | भिगार | १९-९-१८५० |
| १४ | मूढले ,जि पुना | १-१२-१८५० |
| १५ | अप्पा साहेब चिपलूनकर | ३-७-१८५१ |
| १६ | नाना पेठ पुना | १-१२-१८५१ |
| १७ | रास्ता पेठ ,पुना | १७-९-१८५१ |
| १८ | बेताल पेठ,पुना | १५-३-१८५२ |

**(विद्रोही एम.आर." दलित दस्तावेज "पृ.स. ९९)**

**दलित शिक्षा मे योगदान :**

सन १८५४ वर्ष दलितों के उद्धार के लिए सुनहरा और बहुत ही बडा परिवर्तन लानेवाला साबित हुआ। इतिहास मे वूड का खलिता के नाम जाना जानेवाला यह ज्ञापन दलित शिक्षा के व्दार खोलने में मद्दगार साबित हुआ। १९ जुलाई १८५४ इस्ट इंडिया कम्पनी के संचालकों ने एक ज्ञापन भारत सरकार को मार्गदर्शन के लिए भेजा जिसमे लिखा था कि "जो गरीब जनता खुद की मेहनत से शिक्षा लेने मे असमर्थ है, उसे जीवन में उपयुक्त

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

और व्यावहारिक ज्ञान के लिए योग्य बनाने हेतू शिक्षा दी जाये। हमारी इच्छा है की सरकार भविष्य में उचित कदम उठाकर इस लक्ष्य को हासिल करे। इसके लिए सरकार अधिक व्यय करने के लिए तैयार हैं। " इस ज्ञापन मे आगे यह भी लिखा था कि, "किसी भी विद्यार्थी को जाति के कारण सरकारी विद्यालय या महाविद्यालय में प्रवेश देने से इन्कार नही किया जाए। " यह ज्ञापन दलित शिक्षा के लिए महान आदेश ही था। वूड के इस ज्ञापन ने भारतीय शिक्षा क्षेत्र में क्रांति लाई थी। लेकीन यह इतना आसन न था। उस समय उच्च पदों पर विराजमान अधिकारी निम्न वर्ग के शिक्षा क्के विरोधी थे। अहमदनगर के निवासियों ने १८५५ में दलितों के लिए विद्यालय खोलने ने का निवेदन दिया था और उसके अनुसार सरकार ने वहा एक विद्यालय भी खोला था। शिक्षा बोर्ड की रिपोर्ट में यह भी लिखा था की, "यह पहला अवसर है की हम लोगों ने दलितों के लिए विद्यालय खोला है। "( मेश्राम ,एल.जी." महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली ".पृ.सं.)

१८५६ में महार जाति के एक विद्यार्थी को धारवाड के विद्यालय में प्रवेश के लिए वहा के प्रधानाध्यापक ने रोक लगाई थी इस मुद्दे को लेकर केंद्र सरकार और मुंबई सरकार के बीच बहस हुई थी। इस विषय पर राय देते हुए लंडन स्थित कम्पनी के संचालक ने कहा था कि, " हमारा यह उद्देश है की सरकारी शिक्षा संस्था सभी वर्ग के लिए खुली होनी चाहिए। कूछ अधिकारी मुंबई सरकार के डर से सदियों से चली आ रही दुषित परम्परा को तोडने से डरते हैं पर सरकारी स्कूल जाति-पाती विरहित होनी चाहिए। ( कीर धनंजय, "महात्मा जोतिराव फुले " पृ.स.११७ ,मेश्राम ,एल.जी." महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली ".पृ.सं. )

शिक्षा को सावर्जनिक और सभी वर्ग के खुलने के प्रयास तो हो रहे थे पर ब्राह्मण वाद के कारण बार-बार उसमे परिवर्तन भी होते थे। इस समस्या को सुलझाने और उस समस्या का समाधान भी अब उन्हे आशा की किरण दे रही थी। एक ब्राह्मण वर्ग दलित शिक्षा का विरोध कर रहा था, तो वही ब्राह्मण जो ज्योतीराव के मित्र होते थे वे उन्हे शिक्षा कार्य मे मद्द कर रहे थे। दलितों के शिक्षा के बारे में ज्योतिराव का यह विचार था की, "निम्न वर्गों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाये की वे व्यक्तिगत स्वतत्रता के अधिकारों व सामाजिक समानता के समानता के लिए लड सके। ( जगताप ,मु . " युगपुरुष महात्मा फुले " पृ,स,३५, नरके ,एच." महात्मा फुले साहित्य और विचार" पृ.सं . ९० )

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**हंटर आयोग में प्रस्तुत महात्मा फुले के शैक्षिक विचार -**

भारतीय शिक्षा केप्रचार-प्रसार में 'अधोमुखीनिश्यंदन सिध्दांत' प्रचलित था। शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं और उनके सुधार के सम्बध में सुझाव प्रस्तुत करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने विलियम हंटर की अध्यक्षता में सन1882 में एक आयोग गठित किया था।जिसका नाम "हंटर कमीशन" था।उसमे दिए गये सुझावों में महात्मा फुले तत्कालीन शिक्षाव्यवस्था के बारे में बताते हैं की, शिक्षा का प्रारम्भ नीचे से उपर की ओर करना चाहिए न कि ऊपर से नीचे की ओर। पहले नींव और फिर कलश यह शायद आपके इग्लंड में होता होंगा और पहलेकलश फिर नींव का निर्माण वहाँ पर सम्भव हुआ हो हमारे यहाँ यह सम्भव नही हैं। हमारे यहा वर्णभेद हैं, जातिभेद हैं, हमारा समाज अखंड नही हैं । यहाँ ऊँचाई पर रहनेवाले लोग ज्ञान को निचली जाति के लोगों तक आने नही देंती। वें नहरे जरुर खोदेंगे पर बांध बनाकर पानी को उपर ही रोक लेंगे।उन्होंने अब तक ज्ञान गंगा का पानी रोक रखा हैं। आप उन्हे निचली जाति के शिक्षा के अधिकार मत सौपिये। यह जिम्मेदारी आपको ही उठाना होंगा।"

महात्मा ज्योतिराव के विचार से स्पष्ट होता हैं, की उस समय केशिक्षा सम्बन्धी समस्या का अध्ययन ज्योतिराव कर चुके थे।उनकी सोच व्यापक एवं गम्भीर थी। ज्योतिराव ने अपने प्रस्ताव में चिंता व्यक्त की हैं कि, सरकार की अगर यह सोच हैं कि, "उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करेंगी तभी धीर-धीरे निम्न वर्ग शिक्षित एवं संस्कारित होंगा।" तो सरकार धोखे में हैं । सच्चाई तो यह हैं की, गरीब किसानों से पैसा इकट्ठा करके सरकार उसे उच्च वर्ग की शिक्षा पर लुटा रही हैं । यह शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालय अमीरों के लडकों का भौतिक जीवन संपन्न करने का काम कर रही हैं। इन अमीरपुत्रों ने पढकर देशवासियों का कुछ भी भला किया हैं ऐसा दिखाई नही देता। उन्होनें ना तो अपना कोई आदर्श समाज में प्रस्तुत कियाहैं और ना ही जरुरतमदों के लिए कोई स्कुल खोले और ना ही दुर्भागियों को अपने घरों में पनाह दी। तो फिर यह किस काम के हैं?" आगे उन्होनें कहा की "हिन्दी विद्यापीठ के समर्थकों से मेरा सवाल हैं की, वे आज तक के अनुभव के आधार पर हमे कोई एक उदाहरण बता सकते हैं, जो उनकी मान्यता को सही सिद्ध कर दे।" जब ऐसा सिद्ध नही होता हैंतो फिर किस आधार पर यह कहा जाता हैं कि भारतीय समाज के लोगों का बौद्धिक और नैतिक स्तर यदि उपर उठाना हैं तो पहले उच्च वर्गों की शिक्षा का स्तर बढाना होंगा। निवेदन में फुले महोदय एक ओर बातपर ध्यान केंद्रित करते हुए बताते हैं  की, "राष्ट्रकल्याण में वृद्धी हुई हैं अथवा नही यह जानने के लिए महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों की संख्या और विश्वविद्यालयीन उपाधीयों की सूची ही एकमात्र साधन नही हैं । जिस प्रकार जंगल

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

में शिकार के संबंध में कानून बनाने से या दस पौंड कर अदा करने वाले को मतदान का अधिकार देने से संविधान की कल्याणकरिता साबित नही होती उसी प्रकार विश्वविद्यालय से निकलने वाले रंगरूटों या वहाँ के देशी व्यक्तियों की 'संकायाध्यक्ष' और 'डाक्टर' के रूप में नियुक्ति करना इस देश के लिए हितकारी हैं ऐसा साबित नही होता हैं।" निवेदन में आगे उन्होनें बहुत गम्भीर बात पर अपने विचार और सुझाव दिए हैं जो उस समय ब्रिटिश शासन में हो रहे अन्याय और ब्राम्हण के कार्य-कर्तुत्व को स्पष्ट करनेवाले थे। वे निवेदन में कहते हैं कि उच्च वर्गों की सरकारी शिक्षा पध्दति की प्रवृत्ति इस बात से दिखाई देती हैं कि सरकारी वरिष्ठ पदों पर इन ब्राम्हण का वर्चस्व स्थापित हो चुका हैं। सरकार यदि जनता का सचमुच ही कल्याण करना चाहती हैं, तो इन दोषो का निवारण करना सरकार का प्रथम कर्तव्य हैं और निचली जाति के थोडे-थोडे लोगों की नियुक्ति करके दिन-ब-दिन बढ़ रहे ब्राम्हणों के वर्चस्व को सीमित किया जाना चाहिए। कुछ लोग कहते  की यह इस परिस्थिती में सम्भव नही हैं इस पर हम यह जवाब देते हैं कि सरकार ने यदि उच्च शिक्षा पर कम ध्यान दिया और जनता की प्राथमिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया तो नीति और बर्ताव से लोग पढ़-लिखकर अपना जीवन सफल कर सकतेहैं।

**महात्मा ज्योतिरावफुलेका शिक्षा विकल्प प्रतिमान**

हंटर आयोग में फुले महोदय ने केवल भारतीय शिक्षा की तत्कालिन स्थिति का विवरण ही नहीं बल्कि वंचित,पीड़ित, दलित शिक्षा की दशा और दिशा का वर्णन भी किया हैं।फुले महोदय ने वंचित, पीड़ित और दलित के शैक्षिक विकास हेतु शिक्षा का जो प्रतिमान दिया वह शिक्षा प्रतिमान वर्तमान में भी इस समाज के विकास में उतना ही लाभदायक तथा अत्याआवश्यक हैं। इस प्रतिमान में फुले महोदय ने प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, छात्र वृति, शिक्षक के वेतन तथा प्रशिक्षण और विद्यालय की देखभाल तथा प्रबंधन आदि सम्बन्धी तत्कालीन स्थिति का विवरण और सुधार हेतु सुझाव देकर वंचित, पीड़ित और दलित के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

प्राथमिक शिक्षा -अपने प्रस्तुत निवेदन में फुलेमहोदय प्राथमिक शिक्षा के बारे में विचार रखते हैं, कि "मुम्बईक्षेत्र मे प्राथमिक शिक्षा की उपेक्षा हुई हैं। सरकार शिक्षा के लिए जो कर वसूल करती हैं वह रुपये शिक्षा पर खर्च नही कर रही। इस प्रान्त के अनेक गाँवों में लगभग 10 लाख बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा की कोई सुविधा उपब्लध नही हैं। शिक्षा का अभाव ही उनकी दरिद्रता, स्वावलम्बन का अभाव और शिक्षित तथा बुद्धीमान लोगों पर निर्भर रहने की उनकी आदत का कारण हैं।अपनी राय में आगे उन्होंने कहाँकि, प्राथमिक शिक्षा कुछ हद तक अनिवार्य की

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

जाए। कम से कम 12 वर्ष की उम्र तक अनिवार्य होनी चाहिए। छोटी जातियों के लोगों को जातीयता के कारण विद्यालयों में अलग रखा जाता हैं इसलिए उनके लिए सरकार ने अलग से विद्यालय खोलने चहिए।महार, मांग,चांभार आदि छोटी जाति के लोगों की जहाँ अधिक बस्ती हैं वहाँ उनके लिए अलग से विद्यालय खोलने चाहिए। शिक्षा की इस गंभीर स्थिति में सरकारी विद्यालयों से प्राथमिक शिक्षा दी जाए क्योंकी गरीब विद्यार्थियों के लिए कोई खुद के दायित्व पर स्कूल नही खोलेंगे। विद्यार्थियों को यह शिक्षा भविष्य मे उचित और व्यावहारोपयोगी साबित होनी चहिए।पाठ्यक्रम और शिक्षा प्रणाली में पुरी तरह से सुधार किया जाना चहिए। (नरके,एच१९९३)

**माध्यमिक शिक्षा -**माध्यमिकविद्यालय के बारे में फुलेअपने विचाररखते हैंकि, देश का हित जानने वाली कोई भी सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का अनुदान बन्द करे ऐसा आज की परिस्थिती में मै नही कहुंगा क्योंकि ऐसा करना शिक्षा प्रसार-प्रचार के लिए हितप्रद नही होंगा।शिक्षक और विद्यार्थी मैट्रिक की परीक्षा में बेवजह रुचि लेते हैं। इस पाठ्यक्रम में व्यावहारिक ज्ञान नही होता हैं। विद्यार्थी को अपने जीवन मे समर्थ बनाने की योग्यता माध्यमिक शिक्षा में होनी चहिए। ज्ञानप्रसार की सीमा को देखते हुए प्रवेश परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या न के बराबर हैं । फिर भी सरकारी नौकरी की आवश्यकता को देखते हुए यह संख्या अधिक कही जा सकती हैं। शिक्षा ग्रहण करना सभी के वश में होता तो यह संख्या और भी अधिक होती।

**उच्च शिक्षा -**फुले महोदय ने अपने सुझाव में उच्च शिक्षा के बारे कहा हैं ,कि "उच्च शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार हो की उच्च शिक्षा को सभी लोग सहजता से ग्रहण कर सके। मैट्रिक परीक्षा के लिए मान्य विषयों की किताबे जिस प्रकार मद्रास और बंगालके सरकारी राजपत्र में प्रकाशित होतीहैं, उसी प्रकार मुम्बई सरकार भी अपने राजपत्र में प्रकाशित करे। ऐसा करनेसे निजी विद्यालयों कोप्रोत्साहन मिलेंगा और ज्ञान प्रसार की दृष्टी से अधिक सहायता होंगी।" मुम्बई विश्वविद्यालय निजी तौर पर शिक्षा देनेवाले विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठनेकी अनुमति देता हैं तो यह लोगों के लिए एक वरदान होगा। बी.ए, एम.ए. की उपाधि हेतू निजी तौर पर की गई पढ़ाई को विद्यालय यदि मान्यता देता हैं तो कई युवा विद्यार्थी निजी तौर पर पढाई पूरी कर शिक्षा का लाभ हर समय उठा सकता हैं।

**ग्रामीण शिक्षा -**ग्रामीण शिक्षा के बारे में प्रस्तुत विचार फुले महोदय रखते हैं ,कि "ग्रामीण लोगों को ग्रामीण परिवेश का ज्ञान हो, इन लोगों को ग्रामीण व्यापार-व्यवहार का ज्ञान हो। ग्रामीण लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि हैं इसलिए संबधित प्राथमिक ज्ञान हो।मेरा विचार हैं, कि ग्रामीण क्षेत्रों में मोडी और नागरी लिपि में पठन-पाठन हो।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

लेखा, इतिहास, भूगोल औरव्याकरण का साधारण ज्ञान हो। ग्रामीण लोगों के लिए नैतिक उत्थान के आदर्श पाठ और स्वास्थ शिक्षा के पाठ आदि का समावेश पाठ्यक्रम में हो। शिक्षा और दैनिक जीवन के आपसी मेल-मिलाप योग्य शिक्षा होनी चाहिए ।उनकी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में हो। खेतीसे सम्बन्धित एक आदर्श योजना बनानी चहिए। पुस्तकों के पाठ्यक्रम का निरीक्षण कर, उनमे सुधार कर, उन्हे जीवनोपयोगी और व्यवहार परक बनाना चहिए।"

छात्र वृत्ति -ज्योतिराव निवेदन में छात्र वृत्ति के बारे में सुझाव देते हैं, कि "छात्र वृत्तिकुछ इस प्रकार दी जाए की जिस वर्ग में शिक्षा की प्रगति नही हुई हैं, उस वर्ग के बच्चों को कुछ छात्रवृत्तियाँ मिले। छात्र वृत्ति के लिए होड लगाकर छात्र वृत्ति देने की पध्दति योग्य होने पर भी यह निम्न वर्ग के शिक्षा प्रसार में सहाय नही होगी।"

**शिक्षक के वेतन और प्रशिक्षण -** शिक्षक के वेतन और प्रशिक्षण के बारे में फुलेनिवेदन में कहते हैं, कि "प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त शिक्षक अधिकतर ब्राम्हण जाति से हैं।उसमें से कुछ शिक्षक 'सामान्य शिक्षक विद्यालय' से उत्तीर्ण हैं।कुछ शिक्षकअप्रशिक्षित हैं।नगण्य वेतन के अनुसार उनका कार्य भी अपर्याप्त और असंन्तोषजनक हैं। इसलिए मेरी राय हैं,कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक अध्यापक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण किए होऔर अधिकतर किसान वर्ग से हों ताकि यह शिक्षक उन गरीब बच्चों की आवश्यकताओं को, भावनाओं को अधिक अच्छे से समझ सके।उनके साथ सहजता से व्यवहार कर सके। पाठ्यक्रम में सामान्य विषयों के साथ-साथ खेती, कला और स्वास्थ सम्बंधी पाठ्यक्रम हो।अच्छे शिक्षक तैयार करने के लिए उन्हे अधिक वेतन दिए जाए और उनके आर्थिक स्थिति में सुधार किए जाए।उनका वेतन 12 रुपये से कम न हो और बडे शहरों में १५ रुपये से कम न हो। हिसाब-किताब का भी काम उन्हे दिया जाये या कस्बों के शिक्षकों की बजाय जिस विद्यालय के अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण होंगे उन शिक्षकों को प्रोत्साहन के रूप में मासिक वेतन के अलावा कुछ विशेष वेतन भी दिए जाए ।"

विद्यालय की देखभाल तथा प्रबंधन :"उप शिक्षा निरीक्षक विद्यालय में वर्ष में एक ही निरीक्षण करता हैं । इस निरीक्षण से विशेष लाभ नही होता हैं । ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों का निरीक्षण वर्ष में कम से कम चार बार या उससे भी अधिक बार किया जाना चहिए। विद्यालय के निरीक्षण की पूर्व सूचना शिक्षकों को न देते हुए अचानक निरीक्षण करना उपयोगी साबित होगा। उनके द्वारा किया गया निरीक्षण अधिकतर औपचारिक और अपर्याप्त होता हैं "।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**महात्मा फुले का सामाजिक शिक्षा मे योगदान**

१८८२ में भारत की शक्षा सम्बन्धी समस्याओं और उनके सुधार हेतू सुझाव के लए व लयम हंटर ब्रिटिश अ धकारी की अध्यक्षता में आयोग का गठन जिसमें फुले ने अपने निवेदन में

**महात्मा फुले का शिक्षा विकल्प प्रतिमान**

प्राथमिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण

ग्रामीण शिक्षा खर्चा

माध्यमिक शिक्षा स्वरूप

उच्च शिक्षा

छात्र वृत्ति

शिक्षक वेतन पर

शिक्षा का

विद्यालय

१२ वर्ष की उम्र तक प्राथ मक शक्षा अनिवार्य

ग्रामीण शक्षा में कृषी शक्षा को अग्रक्रम,व्यापार-व्यवहार का ज्ञान हो| निरीक्षण वर्ष मे चार बार हो|

वद्यार्थी को जीवन मे समर्थ बनाने वाला पाठ्यक्रम हो | उद्देश केवलपरीक्षा पास करना नही |

उच्च शक्षा छात्र निजी तौर पर पा सके | उसके लए लए वद्यालय ने मान्यतादेनी चहिए|

जिस वर्ग मे शक्षा की प्रगति नही हो रही उन्हे छात्र वृत्ति हो|

सामान्य श क्षक वद्यालय

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

**निष्कर्ष :**

1. महात्मा फुले के समय की दलित, पीड़ित, शोषित और स्त्रीवर्ग की सामाजिक अत्यंत दयनीय थी । भारतीय जनता मे एकता का प्रभुत्व ब्रिटिशों के लिए भयावह था इसलिए ब्राहमण-अब्राहमण तथा उच्चवर्ग और दलित वर्ग के भेदों का दुरुपयोग किया गया । ब्रिटिश शासन के आगमन तक भारतीय समाज को विभिन्न कुरीतियों ने जकड् रखा था । सतीप्रथा, कन्यावध जैसी भीषण एवं बाल विवाह जैसी घातक और अस्पृश्यता तथा जातिभेद जैसी हानिकारक कुरीतियों ने देश को पतन के गर्त में धकेल रखा था

2. महात्मा फुले के समय की राजकीय स्थिति भारतमेंअंग्रेजोंसेपहलेग्रामसंस्था, जातीसंस्था, औरपरिवारकाप्रचलनयहीगावकेजीवनकीआधारशीलाथी। महाराष्ट्र में शिवाजीद्वाराबडेयत्नऔरपरिश्रमपूर्वकस्थापितस्वत्रतमराठाराज्यकोइनपेशवाओंनेअपनीमहत्वाकांक्षा और स्वार्थपरता, जातिवाद, छुंआछुंत, उच्च -नीच, पारस्पारिक वैमनस्य, केंद्रिय सत्ता का अभाव और ब्राह्मण धर्म में पाखण्ड के वर्चस्व के कारण हमेशा-हमेशा के लिए खो दिया और अंग्रेजी शासन का गुलाम बना दिया।

3. महात्मा फुले के समय की आर्थिक किसान खेती करते थे और अपनी उपज का एक भाग राजस्व के रूप में शासक को देते थे । शासक ग्राम प्रधान के माध्यम से वसुली करते थे । अंग्रेजों ने अपने शासन मे अपने अधिकारीयों और भारतीयों एजेंन्टों के नियंत्रण में पुरानी व्यवस्था को जारी रखा । परन्तु यह भारतीय एजेंट उच्च वर्ग के थे । यह किसानों को कष्ट देने लगे । राजस्व निश्चित राशी के रूप में वसूल किया जाने लगा, फिर उपन्न चाहे जो भी हो । राजस्व की वसुली मुद्रा के रूप में होने लगी इसलिए किसान ऐसी फसलें उगाने के लिए मजबूर हुए जिन्हे बाजार में बेचा जा सके । माशिनों द्वारा बनाये कपडे और अन्य उत्पादित वस्तूओं के कारण स्थानीय दस्तकारों के धन्दे भी चौपट हो गए थे।

4. महात्मा फुले के सामाजिक क्रांति में सामाजिक शिक्षाका विकल्प प्रतिमानमहात्मा फुले के सामाजिक क्रांति मे सामाजिक शिक्षा का कार्य इसप्रकार फुले महोदय ने प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, छात्र वृति, शिक्षक के वेतन तथा प्रशिक्षण और विद्यालय की देखभाल तथा प्रबंधन आदि सम्बन्धी तत्कालीन स्थिति का विवरण और सुधार हेतु सुझाव देकर वंचित, पीड़ित और दलित के शैक्षिक विकास मं महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

5. महात्मा फुले की सामाजिक शिक्षा ज्योतीराव ने आजीवन शुद-अतिशूद्र के अधिकारों के लिए संघर्ष किया, वह केवल किसी वर्ग विशेष के लिए नही था बल्की सामाजिक तथा आर्थिक समानता पर आधारित शोषण-रहित समाज बनाने के लिए था । आज जो राजनैतिक दल सामाजिक समानता की बात करते हें, परन्तु उनका उनका प्रयास केवल राजसत्ता हथियाना है पर फुले की सामाजिक क्रांति समाज मे सुधार करना थी और यह आज भी प्रांसंगिक है । वर्तमान सन्दर्भ में वंचित ,दलित और स्त्री शिक्षा की नींव अगर किसी ने रखी है तो ज्योतिबा फुले का एक सामाजिक शिक्षा का प्रतिमान सामने आता है। तत्कालिन समाज मे स्त्री और शूद्र को मानव होने के अधिकार से नकारा था । ज्योतीराव ने आजीवन इनके अधिकारों के लिए जो संघर्ष किया वह केवल किसी वर्ग विशेष के लिए नही था बल्कि सामाजिक तथा आर्थिक समानता पर आधारित शोषण रहित समाज बनाने के लिए था। आज विभिन्न पक्ष के राजनेता एवं सभी राजनैतिक दल सामाजिक समानता की बात करते है पर उनका प्रयास सत्ता के लिए है। पर जिन दलित वर्गों को शिक्षित बनाने के लिए ज्योतीराव आजीवन झगडते रहे , वही शिक्षित होकार उनको पराजित कर रहे हैं।ज्योतिराव ने हंटर आयोग को प्रस्तुत किये गये निवेदन में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, नारी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया। अध्यापक प्रशिक्षित हो और वे किसान वर्ग से हो, उनके वेतन अच्छे हो आदि बाते आज भी प्रासंगिक है तत्कालीनशिक्षा-व्यवस्था परअपने प्रस्तुत विचार में ज्योतीराव ने कहा था की, वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल लिपिक और अध्यापक बनाने की फैक्टी है। आज भी डेढ शताब्दी बीत जाने पर भी शिक्षा के इस रूप में किसी भी तरह का परिवर्तन नही आया है ।

**उपसंहार :**ज्योतिराव अपने समय से बहुत आगे थे । इसका पता इसी बात से चलता है की, उनके उस समय के सुझाव और विचार आज भी प्रासंगिक है। उनका पुरा जीवन धर्मभेद, वर्णभेद और लिंगभेद के खिलाफ एक महान विद्रोह था। सत्य की खोज उनके जीवन का लक्ष्य था। उनके विचार और आचार में किसी भी प्रकार का अन्तर नही था। महात्मा फुलेसन 19 वीं सदि के महान समाज सुधारक और शिक्षा के जनक रहे। कर्मकांडपर उन्होनें प्रहार किया। धर्मग्रंथ का निर्माण ईश्वर ने नही किया।जन्म से कोई नीच-उच्च हैं इस बात का खंडन किया। ईश्वर को निर्भिक कहते हुए सारे मानव समान हैं इस सिद्धांत पर वे अटल रहे।महात्मा फुले के शिक्षा विकल्प प्रतिमान ने तत्कालिन वंचित, पीड़ित और दलित के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रखी हैं। वर्त्तमान में भारतीय शिक्षा व्यवस्था ने वंचित, पीड़ित, दलित के शैक्षिक विकास को लेकर अधिक प्रयास किए पर उतनी सफलता नहीं मिल

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

पायी। इस समाज का गुणात्मक स्तर बढ़ाना शिक्षा व्यवस्था के लिए चुनौति हैं। आर्थिक विकास हेतू ग्रामीण क्षेत्र में कृषि शिक्षा तथा शहरी क्षेत्र मे व्यवसाय परक शिक्षा और सुविधा प्रदान करने के कड़े नियम पारदर्शी एवं सही क्रियान्वयन की आवश्कता हैं। प्रतिदिन मिडिया से प्राप्त खबरों में वंचित,दलित के अन्याय और अत्याचार को लेकर एक खबर जरुर होती हैं।अर्थात आज भी यह वर्ग सुरक्षित हैं इसका प्रमाण देना असम्भव हैं। क्या इसके लिए देश ने इस समाज को दिया दर्जा या शिक्षा अभी भी अधूरी हैं इसका चिंतन करना महात्मा फुले के दृष्टी से आज भी प्रासंगिक हैं। आज ग्रामीण महिलाओं के शिक्षा के विकास मे कोई प्रगति नही दिखाई देती हैं। हमारी सरकार शिक्षा पर प्रतिवर्ष करोडों रुपये खर्च कर रही हैं, फिर भी देश की अधिकतर जनता अशिक्षित हैं,इसका मुल कारण हमारे देश के ग्रामीण और शहरी गरीब परिवार की आर्थिक स्थिति हैं।अपने निवेदन में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, नारी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, ग्रामीण क्षेत्र मे कृषी शिक्षा और शहरी क्षेत्र मे व्यवसाय परक शिक्षा आदि सभी सुझाव ने उस समय समाज में क्रांति लायी थी और यह सुझाव आज भी उतने ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं।

**संदर्भ साहित्य ग्रन्थ सूची :**

*सिरसवाल डी.राज,(२०१३),, "महात्मा ज्योबिता फुले : आधुनिक भारतीय दार्शनिक "*

*ओमवेदत्त,गेल : (२०१४). "ज्योतिराव फुले और भारतीय क्रांति के आदर्श " (२०१४)।*

*जगताप,मु.(१९९३).युगपुरुष महात्मा फुले.मुम्बई:महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिति महाराष्ट्र शासन।*

*विमलकीती,डी.(२००५).महात्मा फुले का समग्र साहित्य ,पुणे : महाराष्ट्र प्रकाशन।*

*मेश्राम,एल .जी .(संपा)(२००२).महात्माज्योतिबा फुले रचनावली, दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन।*

*कीर,डी.(२०१२).महात्मा ज्योतिराव फुले,मुम्बई : पाप्युलर प्रकाशन।*

*नरके,एच.(संपा).(१९९३).महात्मा फुले साहित्य और विचार,मुंबई:महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिति*

*सिंन्हा,वी.एम्.(२००९).आधुनिक भारत का इतिहास,नईदिल्ली :ज्ञान प्रकाशन।*

*शहा,एम.बी.(१९९२).भारतीय समाज क्रांति के जनक महात्मा ज्योतिबा फुले,दिल्ली : राधाकुष्ण प्रकाशन ।*

*विद्रोही,एम आर.(१९८९).दलित दस्तावेज, नईदिल्ली : सम्यक प्रकाशन ।*

*अवथरे,पी.(संपा).(२०१३).समग्र वाड:मय ,महात्मा फुले,औरंगाबाद साहित्य प्रकाशन ।*

*जगताप,मु.(१९९३). युगपुरुष महात्मा फुले,मुम्बई : महात्मा फुलेचरित्र प्रकाशन समिति।*

*पाण्डे,पी.(संपा) जोशी.एल,(२००६).ज्योति चरित्र,नईदिल्ली : नयाशाणाल बुक ट्रस्ट प्रकाशन समिति।*

*नरके,एच.फडके,(संपा).(१९९१).महात्मा फुले गौरव ग्रन्थ,मुम्बई : महाराष्ट्र राज्य शिक्षण विभाग।*

*जोशी,ए. (१९६९). महाराष्ट्र के समाज सुधारक,पुणे : महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा।*

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

विमलकीती. (१९९४). महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन ।

कुमार,प्रभात.(२००७).समाज सुधार में ज्योतिबा फुले का योगदान.जोधपुर :राजस्थानी साहित्य संस्थान ।

शर्मा,एस.(2014).शिक्षण और अधिगम की सृजनात्मक पद्धतियां. नईदिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी ।

अग्रवाल,जे.सी.(2002). स्कूल प्रबन्ध, सूचना एवंसम्प्रषेण तकनीकी. आगरा :सन्वाल पब्लिकेशन।

चंचरीक,के.(२०००).महात्मा ज्योतिबा फुले, नईदिल्ली: प्रकाशन विभाग और सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार ।

शर्मा,आर.ए.(2000). भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास.मेरठ : आर. लाल बुक डेपो ।

**मराठी पुस्तके**

ठोंबरे,वि.(१९९१).महात्मा फुले यांचे कार्य,मुंबई :लोकवाङ् मय गृह ।

गेल,आ.(१९९०). ज्योतिबा फुले यांचा स्त्री-मुक्तीच विचार,मुम्बई :लोक वाड:मय ।

खैरे,एस.चांदणे.ए.(संपा).(२०१५).समतेचे निर्मिक महात्मा फुले,समग्र वाड:मय खंड प्रथम.पुणे:प्रमिमा प्रकाशन।

गिली,एस .(२००५).महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे सार्वजानिक सत्यधर्म .वर्धा:सुधीर प्रकाशन ।

link: http:mesesain.wordpress.com/2013/2014mahatmajyotibaphule-a-mordernIndian-philosopher-by-dr.desh-raj-sirswall

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies